# पाठ 10. जैसे को तैसा

## पाठ का उद्देश्य

एक प्रचलित कहावत है कि सेर को सवासेर आखिरकार मिल ही जाता है। जो लोग कपट, धूर्तता तथा चालाकी से दूसरों का फ़ायदा उठाते हैं, उनकी चीज़ें हड़प लेते हैं, एक न एक दिन उन्हें मुँह की खानी पड़ती है। प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह सीख देना है कि गलत करना अथवा गलत काम में साथ देना कभी न कभी बुरा परिणाम देता है। अतः इससे सदैव बचना चाहिए।

## पाठ का सारांश

गाँव का एक बूढ़ा चौधरी लकड़ियों से भरी गाड़ी लेकर शहर में बेचने के लिए जाता है। वहाँ जतनसिंह नामक एक धूर्त सेठ चालाकी से उसके बैल और गाड़ी दोनों हड़प लेता है। चौधरी घर आकर अपने बेटे सोमपाल को पूरी बात बताता है। सोमपाल अपने पिता का बदला लेने की ठान लेता है। अगले दिन वह लकड़ियों से भरी गाड़ी उसी जगह बेचने के लिए ले जाता है जहाँ सेठ ने उसके पिता को ठगा था। इस बार ठगने की बारी सोमपाल की थी। सोमपाल तथा सेठ के बीच मोल-भाव तय हो जाता है। सोमपाल मोल-भाव के अनुसार सेठ के हाथों को काटने के लिए हँसिया निकाल लेता है। डरकर धूर्त सेठ सोमपाल के पिता के गाड़ी-बैल लौटा देता है। साथ ही, सेठ सोमपाल के पैर पड़ता है और पाँच सौ रुपये भी देता है। बुद्धिमानी और साहस के बल पर सोमपाल सेठ से बदला ले लेता है।

## अध्यापन संकेत

कक्षा के बच्चों से पाठ के एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। पाठ के महत्वपूर्ण अंश अथवा पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते जाएँ। बच्चों से कहानी का मूल भाव जानें।

**पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –**

- धूर्त और चालाक लोगों को कैसे सबक सिखाया जा सकता है?
- यदि तुम सोमपाल की जगह होते तब तुम अपने गाड़ी-बैल कैसे वापस पाते? अपने कुछ सुझाव या उपाय प्रकट करो।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।